'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 15 19 अक्टूबर, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'उत्तरदायित्व वहन को कंधे मजबूत बनाएं'

आज आपके कंधे भारी हो गए हैं। आपने स्वेच्छा से जो उत्तरदायित्व लिया है उसे निभाने के लिए अपने कंधों को मजबूत बनायें। दो दिन से आपने गंभीरता पूर्वक चिंतन कर स्वेच्छा से यह दायित्व लिया है यह प्रसन्नता का विषय है। बाड़मेर स्थित भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम में 7 व 8 अक्टूबर को संघ के कर्मचारी प्रकोष्ठ के दो दिवसीय शिविर में विदाई संदेश देते माननीय संघ प्रमुख श्री ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि समाज में कर्मचारी तबका इतना बड़ा है कि यदि सभी जागरूक हो अपनी ऊर्जा का समाज हित में सकारात्मक उपयोग करें तो समाज के लोगों के सर्वाधिक सहयोगी साबित हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि आपका प्रथम दायित्व समाज एवं कौम के प्रति है लेकिन अपने कार्यक्षेत्र को केवल राजपूतों तक सीमित न रखें। क्षत्रिय की क्षमताओं का हिताधिकारी संपूर्ण समाज है। आप आने वाली पीढ़ी के भविष्य एवं समाज के लोगों को समस्याओं को सुलझाने में बहुत कुछ कर सकते हैं। आपके पास जो भी आये उसे हमेशा सकारात्मक जवाब देवें, टाले नहीं। तनसिंहजी ने समाज में जोगमाया के दर्शन किए, परमेश्वर का स्वरूप माना। (शेष पृष्ठ 2 पर)

समता आंदोलन की मांगों पर नोटिस जारी

आरक्षण की विसंगतियों को लेकर विगत लंबे समय से संघर्षरत समता आंदोलन की विभिन्न मांगों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार को नोटिस जारी किया है। इससे पहले राजस्थान हाईकोर्ट ने इन मांगों को खारिज कर दिया था एवं हाईकोर्ट की डबल बैच ने भी लंबे समय तक लंबित रख खारिज कर दिया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसे स्वीकार कर राज्य सरकार को नोटिस जारी किया है जिस पर राज्य सरकार को जवाब देना पड़ेगा।

येआठ मांगे निम्नानुसार हैं :

- 2008 में आरक्षण की सीमा 68 प्रतिशत की गई थी, उसे रोका जाए। आरक्षण 50 प्रतिशत से ज्यादा न हो।
- एसबीसी आरक्षण पर रोक लगे।
- इसरानी आयोग की रिपोर्ट (जिसके कारण गुर्जरों को 5 प्रतिशत आरक्षण मिला) को खारिज किया जाए।
- एससी/एसटी आरक्षण में क्रीमि लेयर लागू की जाए।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'बैठकों की सद्गति हो, परिणाम भी निकलें'

हमारे यहाँ किसी का देहान्त हो जाता है तो प्रायः कहते हैं कि भगवान इन्हें सद्गति दे अर्थात इनका अगला जीवन अच्छा हो। श्रेष्ठ परिणाम निकले। हम बैठकें करते हैं। रोजगार शिक्षा आदि की बातें करते हैं लेकिन सद्गति नहीं हो पाती, परिणाम नहीं निकलता या फिर बैठकें आंदोलनों में बदल जाती हैं, पटरियां उखाड़ने लगते हैं, सड़कों पर उछलना व नारे लगाना प्रारंभ कर देते हैं लेकिन बैठकों की सद्गति सड़कों पर जाने से नहीं बल्कि समाज में जाने से होगी। समाज जागरण और आत्म-जागरण से होगी। आत्म जागरण आत्म चिंतन से होगा। जोधपुर के डिगाड़ी क्षेत्र में 1 अक्टूबर को आयोजित पारिवारिक स्नेह मिलन एवं स्नेह भोज कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपरोक्त बात कही। उन्होंने कहा कि जौहर शाकों की बातें, तलवारों की बातें इतिहास हो गई हैं लेकिन उनके पीछे की त्याग की भावना की आवश्यकता शाश्वत है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(विजयादशमी पर शस्त्र व शास्त्र पूजन संपन्न) संगठन है युगानुकूल शस्त्र : सरवड़ी

शस्त्र अन्यायी से लड़ने के काम आता है तो शास्त्र यह बताता है कि किससे लड़ना है। तलवार बंदूक आदि आज के शस्त्र युग के शस्त्र नहीं हैं बल्कि युग के अनुकूल शस्त्र संगठन है लेकिन साथ में यह समझ भी आवश्यक है कि संगठन किन लोगों का हो और उस संगठित शक्ति का उपयोग कहां किया जाए। यह समझ शास्त्र से ही संभव है इसलिए शस्त्र के साथ शास्त्र का होना आवश्यक है। राजपूत सभा भवन प्रांगण जयपुर में प्रताप युवा शक्ति द्वारा विजयादशमी के अवसर पर आयोजित शस्त्र एवं शास्त्र पूजन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह सरवड़ी ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि समाज के प्रति पीड़ा के बिना संगठन संभव नहीं है, हमें यह कहना अच्छा लगता है कि यह कौम ना मिटने पाएगी लेकिन पूज्य तनसिंहजी ने इसी गीत के अंत में यह शर्त डाली है कि जिस कौम के बंदे भोग और ऐश्वर्य की मनुहारे ठुकरा कर जंगल जंगल भटकर कर तपस्या द्वारा क्षमता अर्जित कर घर-घर दीप जलायेंगे वह कौम नहीं मिट पायेगी। यदि हम ऐसा बनने का प्रयत्न कर रहे हैं तब ही शस्त्र और शास्त्र का पूजन करने की सार्थकता है।

कार्यक्रम में उपस्थित जन समूह ने विधिपूर्वक शस्त्र एवं शास्त्र का पूजन किया एवं तदुपरांत सुसज्जित राम रथ के साथ राजपूत सभा भवन से विभिन्न चौराहों, मार्गों से होकर शक्ति संचलन निकाला गया। कार्यक्रम के समापन पर महाराव शेखाजी की 584वीं जयंती मनाई गई। समारोह में प्रताप युवा शक्ति के संयोजक कुलदीपसिंह सिरसला एवं उनकी पूरी टीम के साथ राजपूत सभा के सचिव बलबीरसिंह हाथोज भी उपस्थित रहे। संचालन जयपालसिंह मांडोता ने किया। प्रताप युवा शक्ति पुणे एवं राजस्थान राजपूत समाज पूणे द्वारा कोढवा के दुर्गामाता मंदिर में कार्यक्रम किया जिसे संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक पवनसिंह बिखरण्या, महिपालसिंह धूलिया आदि ने विचार व्यक्त किए। बालोतरा शहर में दुर्गादास राजपूत हॉस्टल में राजपूत सेवा समिति के तत्वावधान में शस्त्र पूजन कार्यक्रम किया गया। नागौर जिले के लोरोली में नौ दिन तक शक्ति आराधना करने के पश्चात विजयादशमी के अवसर पर शस्त्र एवं शमी के वृक्ष का पूजन किया गया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ एक का शेष)

उत्तरदायित्व...

आप भी यहीं सोचें कि आपके पास आने वाला समाज बंधु मां का स्वरूप है और आपको मां की सेवा करने का अवसर मिला है।

7 अक्टूबर को सायं 5 बजे से प्रारंभ हुए शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री के स्वागत उद्बोधन के उपरांत श्री क्षत्रिय युवक संघ की गतिविधियों की जानकारी दी गई। 8 अक्टूबर को कर्मचारी प्रकोष्ठ के गठन की भूमिका, उद्देश्य, सदस्यता अभियान की जानकारी देने के उपरांत सामूहिक चर्चा का सत्र रखा गया जिसमें युवाओं का विभिन्न स्तरों पर मार्गदर्शन करने, समाज के लोगों के लिए जिला स्तर पर मार्गदर्शन केन्द्र बनाने, जिला स्तर पर विभिन्न विभागों में समन्वय कर समाज के लोगों के वैध कामों में सहयोग करने, वैध कामों को करने की प्रक्रिया से अवगत करवाने, युवाओं के लिए पुस्तकालय विकसित करने, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी का प्रसार करने, गांवों की खेल प्रतिभाओं एवं अन्य प्रतिभाओं को चिन्हित करने, आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभाओं को कोचिंग हेतु सहायता उपलब्ध करवाने आदि विषयों पर गणपतसिंह हुरों का तला, प्रेमसिंह लुणु, तनसिंह बाड़मेर आगोर, हीरसिंह सनावड़ा, उदयसिंह भीमरलाई, दीपसिंह रणधा, दुर्जनसिंह, टीलसिंह चूली, शेरसिंह भुरटिया, गोपालसिंह सुआला, मलसिंह उण्डखा, कानसिंह खारा, पृथ्वीसिंह, प्रीतमसिंह भुरटिया, मंगलसिंह डाबली आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। परिचर्चा उपरांत केन्द्रीय समन्वयक कृष्णसिंह राणीगांव के निर्देशन में युवाओं के मार्गदर्शन, समाज के लोगों को कार्यालयों में कार्य हेतु मार्गदर्शन समाज के कर्मचारियों की प्रताड़ना के विरोध, विभिन्न कार्यों के लिए वित्त की व्यवस्था, सदस्यता अभियान व रिकोर्ड संधारण हेतु अलग-अलग समूह बनाकर कार्ययोजना बनाई एवं सभी के सामने अपनी अपनी कार्य योजना प्रस्तुत की। शिविर में बाड़मेर जिले के अतिरिक्त जयपुर, जालोर, जोधपुर, जैसमलेर, बीकानेर जिलों के भी प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि उपस्थित रहे एवं उन्होंने अपने अपने जिले के सदस्यता अभियान व जिला स्तरीय शिविर की योजना बनाई।

समता आंदोलन...

- मीणों को एसटी से बाहर किया जाए।
- बीपीएल केटेगरी को आरक्षण का आधार बनाया जाए।
- विकास अध्ययन संस्थान द्वारा गुर्जरों के पक्ष में बनाई गई रिपोर्ट खारिज की जाए।
- 70 वर्षों में हुए विकास के मद्देनजर एस/एसटी/ओबीसी का आरक्षण कोटा कम किया जाए।

बैठकों...

वे लोग त्याग करने में झिझकते नहीं थे और आज हम सामाजिक काम में आधा घंटा देने में भी झिझकते हैं। पुराने जमाने की तरह आज बाहर युद्ध नहीं है लेकिन अंदर अब भी युद्ध चल रहा है। हम हमारे अंदर के युद्ध को संभालना चाहिए। आज राजनैतिक या अन्य लोग बखेड़ा खड़ा करते हैं और युवा व प्रोढ सभी भटक जाते हैं क्योंकि दिशा दर्शन सही नहीं है। हर जगह हम लापरवाही करते जा रहे हैं। परिवार समाज, बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व के प्रति गंभीरता नहीं है। बच्चों को अध्यापकों के भरोसे छोड़ दिया है।

उन्होंने कहा कि लापरवाही को सावधानी में बदलना आवश्यक है। यह सब जागरण के अभाव में संभव नहीं है। समाज जागरण, राष्ट्र जागरण एवं आत्म जागरण की आवश्यकता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी जागरण में संलग्न है। यदि हम सभी छोटे छोटे समूहों में अलग-अलग वर्गों में संगठित होकर एक निर्देशन में प्रयास करेंगे तो यह असंभव नहीं है। संघ क्षत्रिय के गुणों का अभ्यास करवाता है, वह अपना काम कर रहा है, चाहता है कि आप सभी उस काम में सहयोग करें लेकिन साथ ही शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी पूर्व सैनिक, व्यवसायी, अधिवक्ता आदि सभी वर्ग अपने अपने स्तर पर संगठित होकर एक निर्देशन में चलना शुरू करें तो सब संभव है। क्षत्रिय का जीवन स्वयं के लिए नहीं होता। हमारे संगठित होने से केवल हमारा भला नहीं होगा बल्कि संसार के जागरण का मार्ग, संसार के कल्याण का मार्ग, संसार का भटकाव रोकने का मार्ग राजपूत से होकर निकलता है। संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन से पूर्व 2013 के बैच में राजस्थान प्रशासनिक सेवा की अधिकारी के रूप में चयनित पुष्पा कंवर सिसोदिया ने कहा कि हम सब को श्री क्षत्रिय युवक संघ का छाता उपलब्ध है यह हमारे लिए गौरव का विषय है। उन्होंने युवाओं के रोजगार के विषय में कहा कि विकल्पों की बहुलता में संकल्प की मजबूती नहीं होती इसलिए हमारी ऊर्जा किसी एक विकल्प पर एकाग्रता से लगनी चाहिए। इसी बैच के अधिकारी सज्जनसिंह राठौड़ ने कहा कि पुष्पा कंवर जी नियमित पढ़ाई छोड़ने के 13 वर्ष बाद भी आर ए एस की परीक्षा में टॉप 10 में चयनित हो सकती हैं यह हमारी क्षमताओं का श्रेष्ठ उदाहरण है इसलिए हमें किसी भी प्रकार की निराशा के बिना प्रयत्न करने चाहिए। कार्यक्रम का संचालन संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने किया। डिगाड़ी क्षेत्र में राजपूतों की छोटी छोटी कई कॉलोनी हैं, सभी कॉलोनी के परिवार कार्यक्रम में शामिल हुए।

सुमेरपुर में प्रतिभा सम्मान

राजपूत एज्युकेशनल ग्रुप सुमेरपुर के तत्वावधान में एक अक्टूबर को प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया जिसमें राजकीय सेवाओं में चयनित 35 व शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 205 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। समारोह में अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रामचन्द्रसिंह झाला ने पूर्वजों के आदर्शों को अंगीकार कर समाज एवं राष्ट्र की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की आवश्यकता जतायी। पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह सिरोही ने इतिहास के प्रेरणादायी उदाहरणों से सीख लेने की बात कही। अहमदाबाद से आये कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. शक्तिसिंह देवड़ा ने शराब एवं तंबाकू सेवन से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी। संत समतारामजी ने क्षात्र भाव अपनाने की बात कही। समारोह के संयोजक संग्रामसिंह भारूंदा ने आभार जताया।

गुजरात पुलिस में सब इंस्पेक्टर बने

गुजरात में संघ के स्वयंसेवक दीवानसिंह काणेटी, हरपालसिंह धोलेरा व पराक्रमसिंह गोदावरी विभागीय परीक्षा पास कर सब इंस्पेक्टर बने हैं। पहले से पुलिस में सेवारत ये तीनों स्वयंसेवक अपने शासकीय दायित्वों के साथ साथ संघ कार्य भी जिम्मेदारी पूर्वक करते हैं। तीनों को पथप्रेरक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

कुरजां

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

कुरजां एक अद्भुद पक्षी है जिसका राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के रेगिस्तानी भूभाग में बड़ा ही महत्व है। इसका मूल स्थान उत्तरी पूर्वी युरोप है। जहां यह हरे भरे मैदानों एवं दलदली क्षेत्रों के निवासी हैं। युरोप में जब सर्दी ज्यादा बढ़ जाती है तो ये पक्षी वहां का स्थल छोड़कर उत्तरी अफ्रिकी देशों चीन एवं भारत के जल भरे स्थानों पर प्रवास करने मेहमान बन कर आते हैं। अक्टूबर से मार्च तक ये भारतीय भू-भाग पर मंडराते हैं। थार का रेगिस्तान इनके लम्बे प्रवास मार्ग पर मिड वे हॉल्ट के रूप में पड़ता है। सदियों से कुरजां रेगिस्तान में विचरण को आती रही है। यह यहां की संस्कृति का एक हिस्सा हो गई है। कुरजां प्रेम और विरह के संवाद में लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है। लोक कथाओं में इसे प्रेमी एवं प्रेयसी के संदेश वाहक के रूप में माना गया है। यह अच्छे शगुन एवं अच्छे जमाने (वर्षा) के आने की द्योतक मानी गई है। कुरजां पर कई लोक गीत एवं लोक कथाएं लिखी गई। कुछ गीतों में कुरजां इस तरह अभिव्यक्त है-

'कुरजां म्हारी रे, हाले नी अलीजा रे देश
कुरजां हाले तो जैसाणो घुमा दयां
कराद्यां थाने गड़ीसर री सैर।'

●●●●

'कुरजां म्हारी रे म्हारा पियु बसे परदेश
आती जाती म्हारों सदेशों लेती जाजे रे।'

●●●●

'कुरजां ए म्हारा भंवर, मिला दीजे राज।'

इस तरह कुरजां पक्षी को श्रृंगार रस के प्रतीक के रूप में राजस्थानी साहित्य में खूब लिखा एवं गाया गया है। कुरजां लगभग तीन फीट लम्बी होती है। इसके पांव पतले एवं दो फीट ऊंचे होते हैं। कुरजां एक शर्मीला पक्षी है जो सामान्यतः शाकाहारी है। कुरजां भूरे सलेटी रंग की होती है। पंख काले रंग के होते हैं। आंखों के पीछे सिर पर काले रंग के मध्य सफेद धब्बा बड़ा ही आकर्षक लगता है। कुरजां कुई कुई की आवाज करती है तथा उड़ते वक्त इनके पांवों से कड़ कड़ की आवाजी आती है। शाम के वक्त वी (V) के आकार को बनाकर उड़ती है तो इनकी सुरीली आवाज के साथ आकाश का दृश्य बड़ा मनभावन लगता है। इनके आगे एक मार्शल पक्षी भी चलता है जो इन्हें आगे के मार्ग के बारे में सूचना देता है। कुरंजा का असली नाम डीमाईसल क्रेन है। कुरजां प्रवास के दौरान प्रजनन नहीं करती, ये पक्षी अपने अण्डे अपने मूल स्थान पर ही देते हैं इनके झुण्ड में असंख्य बच्चे इनके साथ रहते हैं। कुरजां प्रतिदिन सुबह झुण्ड बनकार रेगिस्तानी इलाकों में खेतों में अन्न के दाने, पानी में मौजूद वनस्पति आदि का आहार लेती है। कुरजां का यहां मुख्य भोजन बाजरा, चना, गेहूं व अन्य फसलें हैं। इसके अलावा ये झीलों व तालाबों के किनारे की मिट्टी अपने पंजों से खोदकर कन्द व बीज खाते हैं। मूलतः यूरोप के ठण्डे वातावरण, हरे भरे घास के मैदान, पानी एवं दलदली जमीन पर रहने की आदी कुरजां रेगिस्तान के रेतीले एवं कंकरीले स्थान में आकर यहां के उष्ण वातावरण में घुल मिल जाती है। इसलिए कुरजां यहां सामाजिक समरसता की प्रतीक है। कुरजां वैसे तो पश्चिमी राजस्थान के कई हिस्सों में प्रवास करती है परन्तु जोधपुर जिले के फलोदी के पास स्थित खीचन गांव में तो हर वर्ष हजारों की संख्या में आती है। वहां पर्यटन भी बढ़ गया है तथा प्रकृति प्रेमी एवं पर्यावरणविद् इन पर अध्ययन एवं शोध कार्य करने लगे हैं। कुल मिलाकर कुरजां राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक हिस्सा बन गई है। राजस्थान पर्यटन विभाग ने कुरजां पर एक पोस्टर निकाला है तथा बालोतरा (बाड़मेर) में अपने विभाग की बनी होटल का नाम भी कुरजां रखा है।

राजपूत शब्द के करंट को महसूस करें

ध्वजारोहण : मा.प्र.शि. नौसर

गहरा विश्राम : मा.प्र.शि., दूदवा

साज-सज्जा : मा.प्र.शि., गुड़ाश्यामा

पूर्वजों ने मान बिंदुओं की रक्षा के लिए अचिंत्य बलिदान किए हैं। उन बलिदानों का प्रतीक है यह केसरिया ध्वज, इसलिए हम इसकी वंदना करते हैं। इतिहास में छोटी-छोटी बातों के लिए किए गए हमारे बलिदान को लोग पगलपन कह सकते हैं। उनके लिए यह सब अकल्पनीय है क्योंकि यह बात तो हमारी है और इसे हम ही जानते हैं। काल के प्रभाव से हमारी स्मृति धुमिल अवश्य पड़ी है, परंतु मिटी नहीं है इसीलिए तो राजपूत शब्द सुनते ही हम आकर्षित होते हैं। वास्तव में राजपूत शब्द में करंट है और इसी करंट के प्रभाव में हमने इस भूमि की मातृ स्वरूप में बंदगी की है। आज हमें इस करंट को महसूस करने आवश्यकता है। बाड़मेर जिले के नौसर गांव में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के स्वागत कार्यक्रम में माननीय संघ प्रमुख श्री ने स्वागत उद्बोधन देते हुए यह बात कही। उन्होंने स्वागत कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावकों से कहा कि दूसरों को दोष देना पुराना हथकंडा है और प्रायः आप भी बच्चों को दोष देते हैं लेकिन संघ मानता है कि इनमें संपूर्ण क्षमताएं हैं इसलिए संघ इन्हें सुन्दर मूर्तियां बनाने में संलग्न है। आवश्यकता है कि आप सब सहयोग करें। यदि माता पिता एवं अध्यापक जागरूक नहीं होंगे तो बालक जागरूक नहीं हो सकते और दुर्भाग्य से ऐसा ही हो रहा है। उन्होंने पूज्य तनसिंहजी को उद्धृत करते हुए कहा कि वे कहते थे कि जो लोग क्षत्रिय युवक संघ के काम को संकुचित कहते हैं वे स्वयं संकुचित मानसिकता के हैं क्योंकि क्षात्रधर्म का पालन करने के लिए स्वयं को तैयार करना कभी संकुचितता नहीं हो सकता। क्षात्र धर्म समस्त घेरों को तोड़कर संपूर्ण सृष्टि के रक्षण की बात करता है। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि शिविर में शिक्षकों से अपने सभी प्रश्न पूछें, सभी कुंठाओं का निराकरण कर जाएं, किसी भी बात को स्वीकार करने से पहले उसकी तह तक जायें। आप सभी मल्लीनाथ जी के मंदिर में आए है लेकिन संघ आपको स्वयं को मल्लीनाथजी बनाने को आया है, आप सभी संघ का सहयोग करें।

नौसर शिविर का संचालन केन्द्रीय कार्यकारी प्रकाशसिंह भुरटिया ने किया एवं संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी अपने सहयोगियों सहित सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। शिविर में सिवाणा, बालोतरा एवं बायतु प्रांत के स्वयंसेवक प्रशिक्षण ले रहे हैं। बाड़मेर जिले के ही चौहटन प्रांत के बहादुरपुरा (दूधवा) में 8 से 14 अक्टूबर तक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसका संचालन स्थानीय स्वयंसेवकों के सहयोग से संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा ने किया। शिविर में 9 से 11 अक्टूबर तक माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य मिला। प्रभात संदेश के रूप में शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप सभी के मन में ये प्रश्न उठने चाहिए कि मैं कौन हूं? मैं कहां से आया हूं? मुझे कहां जाना है? साथ ही इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। यह प्रयास ही जीवन को सार्थकता की ओर लेकर जाएगा। संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में 11 अक्टूबर को स्थानीय सहयोगियों एवं समाज बंधुओं का स्नेह मिलन रखा गया जिसे संबोधित करते हुए संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप सब के बच्चे समाज की धरोहर है, उनके प्रति जागरूक होकर उनके जीवन को सही दिशा देना आप सबका कर्त्तव्य है, संघ इस काम में आपका सहयोग करने को तत्पर है बस आपके सहयोग की आवश्यकता है। पाली जिले के गुड़ाश्याम गांव के धारेश्वर महादेव मंदिर में 9 से 15 अक्टूबर तक मा.प्र.शि. केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के संचालन में संपन्न हुआ। शिविर में पाली, गोड़वाड़, आहोर, रानीवाड़ा, सायला, सिरोही प्रांतों के साथ साथ मेवाड़ संभाग के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। इसी अवधि में पोकरण संभाग के राजमथाई में मा.प्र.शि. संपन्न हुआ जिसका संचालन केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने सांवलसिंह सनावड़ा आदि के सहयोग से किया। इस प्रकार 4 स्थानों पर माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर इस अवधि में संपन्न हुए। माध्यमिक प्रशिक्षण शिविरों में दो प्रा.प्र.शि. कर चुके एवं 60 दिन तक शाखा में गए हुए स्वयंसेवक अग्रेतर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इन शिविरों के अलावा 8 से 12 अक्टूबर के अविध में 10 प्रा.प्र.शि. भी संपन्न हुए जिनमें दो बालिकाओं के थे। जैसलमेर के जवाहर राजपूत छात्रावास प्रांगण में संतोष कंवर सिसरवादा के संचालन में बालिका शिविर 8 से 11 अक्टूबर तक हुआ जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी रामसिंह माडपुरा व संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा का मार्गदर्शन मिला। सीकर के महरोली गांव में इसी अवधि में बालिका शिविर हुआ जिसका संचालन कल्पना कंवर सिंघाणा ने डा. मनोहरसिंह किनसरिया के निर्देशन में किया। इसमें सीकर, जयपुर, महरोली, मानगढ़, मऊ आदि स्थानों की बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। इसी अवधि में नागौर के भंडारी व डेह गांव में प्रा.प्र.शि. संपन्न हुए। भंडारी का संचालन नत्थूसिंह छापड़ा व डेह शिविर का संचालन खींवसिंह सुल्ताना ने किया। भीलवाड़ा के बंजारी का देवरा (अभयपुरा) में इसी अवधि में हुए शिविर का संचालन बृजराजसिंह खारड़ा ने किया जिसमें भीलवाड़ा हाड़ोती प्रांत के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। सीकर जिले के मूंडरू में हुए शिविर का संचालन राजेन्द्रसिंह बोबासर ने किया। प्रांत प्रमुख रामसिंह आकदड़ा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। 9 से 12 अक्टूबर तक जैसलमेर के लोद्रवा गांव में बालकों का प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर हुआ जिसका संचालन रतनसिंह बडोड़ागांव ने किया। इसी अवधि में बीकानेर के कोलायत प्रांत के गोकुल गांव में दयाल सिंह किशोरपुरा के संचालन में शिविर हुआ। जयपुर संभाग के दौसा प्रांत में दौसा शहर से बाहर सुरजपुरा रोड स्थित नवदुर्गा कंपनी के कार्यालय में प्रा.प्र.शि. हुआ जिसमें उदयपुरा, लिखली, झापड़ावास, मोचींगपुरा, जिरोता, चाउण्डेड़ा, गांवड़ी, बरखेड़ा, खेड़ली, सुमेल, टांई, छापोली आदि गांवों के शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन मदनसिंह बामण्या ने किया।

विदाई : बा.प्रा.प्र.शि., जैसलमेर

सामूहिक यज्ञः प्रा.प्र.शि., डेह

स्वागत : बा.प्रा.प्र.शि., महरोली

संपादकीय

उर्ध्वाधर विकास और क्षैतिजीय विस्तार

विकास एवं विस्तार दोनों अलग-अलग शब्द हैं लेकिन दोनों एक दुसरे से संबद्ध भी हैं। विकास विस्तार पाकर कल्याणकारी बनता है वहीं विकास विहीन विस्तार अकल्याणकारी होता है। लेकिन दोनों की गति अलग-अलग तरह की होती है। विकास की गति उर्ध्वाधर (Vertical) होती है वहीं विस्तार की गति क्षैतिजीय (Horizontal) होती है। विकास उर्ध्वगति वाला होता है क्योंकि विकास का अर्थ ही वर्तमान स्थिति से ऊपर उठाना होता है। नीचे गिरना या अधोगति को प्राप्त होना तो विकास नहीं विनाश होता है। लेकिन यदि ऐसा विकास विस्तार नहीं पाये, केवल उर्ध्वाधर गति हो लेकिन क्षैतिजीय गति ठप्प हो जाए तो ऐसा विकास व्यक्तिवाद पनपाता है। इस प्रकार का विकास समाज, राष्ट्र एवं परमेश्वर की सृष्टि के निरपेक्ष हो जाता है और इस प्रकार की निरपेक्षता उस विकास का लाभ संकुचित कर कालांतर में समाप्त कर देती है। इससे इतर यदि यह उर्ध्वाधर विकास क्षैतिजीय विस्तार भी पाता जाए तो अपने साथ साथ अपने आस पड़ौस, परिवार, समाज और राष्ट्र को भी उर्ध्वाधर गति की ओर उन्मुख करता है और ऐसा ही विकास विश्वात्मा के दृष्टिकोण से अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है। यह विकास का पक्ष है लेकिन विकास के अभाव में विस्तार भी घातक होता है। अविकसित लोग यदि विस्तार पाते हैं तो सृष्टि में जड़ता का साम्राज्य स्थापित होता है। अराजकता पनपती है और तपोगुणी अधोगति आच्छादित होती है। इस प्रकार विकास एवं विस्तार एक दूसरे के पूरक हैं और यदि ऐसा नहीं होता है तो इसके अभाव में पनपने वाला असंतुलन घातक होता है। विस्तार विहीन विकास व्यक्तिवाद पनपाता है क्योंकि विकास कभी अवरुद्ध नहीं हो सकता, उसकी गति को उर्ध्वाधर जारी ही रहती है लेकिन संकुचित हो जाती है वहीं विस्तार भी थकता नहीं है उसकी भी क्षैतिजीय गति जारी रहती है लेकिन वह विस्तार होता है तपोगुणी जड़ता का। ऐसे में जागरूक लोगों का यह दायित्व बनता है कि वे उर्ध्वाधर विकास को क्षैतिजीय विस्तार देवें और विस्तार की चाह रखने वालों को उर्ध्वाधर विकास में संलग्न करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही प्रयास है। यहाँ केवल उर्ध्वाधर विकास की व्यक्तिगत चेष्टाएं ही नहीं हैं बल्कि ऐसी समस्त चेष्टाओं का क्षैतिजीय विस्तार भी अनवरत जारी रहता है। लेकिन साथ ही विस्तार की चाह रखने वालों को पूज्य तनसिंहजी का यह दर्शन उर्ध्वाधर विकास के लिए निरंतर प्रेरित करता है। पूज्य तनसिंह जी का दिया यह विचार केवल व्यक्तिगत विशिष्टताएँ हासिल कर उनका स्वयं के लिए उपयोग करने तक सीमित नहीं है बल्कि इस प्रकार की विशिष्टताएं हासिल कर उसका हिताधिकारी संपूर्ण समाज को बनाने का समर्थन करता है। यहाँ किसी कंदरा या गुफा में बैठकर व्यक्तिगत विकास की बात नहीं की जाती बल्कि सभी पारिवारिक-सामाजिक दायित्व निभाते हुए विकास की ओर बढ़ने की बात की जाती है और साथ ही जो कुछ हासिल होता है उस ओर अपने साथ चलने वालों की खींचकर उस उपलब्धि का अधिकतम विस्तार करने की प्रक्रिया भी साथ चलती है। इसलिए संघ ने अपनी प्रणाली को साधना शब्द से नवाजा है और उस साधना की विशेषता बताते हुए उसे उर्ध्वगति की साधना बताया है। इसलिए संघ विस्तार को उपेक्षित किए बिना विकास की बात करता है लेकिन विस्तार की चाह में विकास को भी उपेक्षित नहीं करता। संघ विस्तार तो चाहता है लेकिन विकास से किसी भी प्रकार के समझौते की बात भी नहीं करता। इस प्रकार संघ विकास विहीन विस्तार या विस्तार विहीन विकास दोनों का ही समर्थक नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से समाज के अतिउत्साही उतावले लोग विकास को उपेक्षित कर विस्तार की तरफदारी करते हैं और श्री क्षत्रिय युवक संघ की गति पर प्रश्न उठाते हैं वहीं कुछ लोग अपने व्यक्तिगत भौतिक या आध्यात्मिक विकास में इतने व्यस्त हैं कि उन्हें अपने पड़ौसी से भी कोई लेना देना नहीं है। इस प्रकार का व्यक्तिवादी जीवन हमारा आदर्श नहीं बन सकता और वस्तुस्थिति तो यह है कि इस प्रकार के व्यक्तिवादी विकास में संलग्न संत जन भी एक स्तर के बाद समाज में आकर अपनी उपलब्धियों का समाज में विस्तार करते हैं। लेकिन यदि विस्तार का काम, विस्तार का नेतृत्व करने का काम विकास की उर्ध्वगति को न अपनाने वाले लोगों के हाथ में होता है तो पीछे चलने वाले लोगों का बंटाढार ही होता है। इसके अनेक उदाहरण आज समाज में दृष्टिगोचर हो रहे हैं और समाज ऐसे लोगों की करतूतों का परिणाम भी भोग रहा है। इसलिए आवश्यकता है कि विकास और विस्तार के बीच संतुलन वाली पूज्य तनसिंहजी की विचार प्रणाली हम सब के सक्रिय सहयोग से गति पाये ताकि समाज को, राष्ट्र को और संपूर्ण सृष्टि को इसका अधिकमतम लाभ मिल सके। संघ अपने संपर्क में आने वाले व्यक्ति को प्रथम दिन से ही दोनों का संतुलन सिखाता है। शाखा में आने वाले स्वयं सेवक को अपने स्वयं के जीवन को विकास के मापदण्डों पर कसने का अभ्यास करवाया जाता है वहीं उसे उसी दिन से अपने मित्रों को भी इस मार्ग पर लाने को प्रेरित किया जाता है। यह प्रक्रिया संघ के सामान्य स्वयं सेवक से शीर्ष नेतृत्व तक निरंतर चलती रहती है और यही संघ का आदर्श है। आवश्यकता है कि हम सबका आदर्श भी यही बने।

नियो किड्स अस्पताल का निरीक्षण

अपने जोधपुर प्रवास के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री ने 2 अक्टुबर की प्रातः संघ के स्वयंसेवक डॉ. डूंगरसिंह जालीला के अस्पताल का निरीक्षण किया। डॉ. डूंगरसिंह ने संघ प्रमुख श्री को बताया कि जन्मजात से लेकर 18 वर्ष तक के बच्चों की सभी प्रकार की गंभीर बीमारियों का ईलाज करने वाला राजस्थान का यह अपनी तरह का पहला अस्पताल है। इसमें वे स्वयं बच्चों के सुपरस्पेशलिस्ट सर्जन एवं पीडियाट्रिक यूरोलोजिस्ट के रूप में सभी प्रकार की सर्जरी के लिए 24 घण्टे उपलब्ध रहते हैं। सभी प्रकार के संसाधनों से युक्त दो अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर उपलब्ध हैं। उनके अतिरिक्त नवजात, बाल व गहन चिकित्सा इकाई विशेषज्ञ के रूप में डॉ. अमरसिंह सीरवी कार्यरत हैं जो अस्पताल में उपलब्ध दो अत्याधुनिक गहन चिकित्सा इकाईयों (नवजात गहन चिकित्सा इकाई व शिशु गहन चिकित्सा इकाई) का संचालन करते हैं। डॉ. बलदेव शर्मा नवजात एवं बाल रोग विशेषज्ञ के रूप में 24 घंटे उपलब्ध रहते हैं। इनके अतिरिक्त बाल अस्थि रोग विशेषज्ञ के रूप में डॉ. हितेश चौहान कार्यरत हैं। माह में दो दिन बच्चों के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. हिमांशु त्यागी भी उपलब्ध रहते हैं। डॉ. डूंगरसिंह ने बताया कि अस्पताल में हर समय उन चारों चिकित्सकों में से कोई एक आवश्यक रूप से उपस्थित रहता है। अस्पताल की वर्तमान क्षमता 40 बेड की है जो एडवांस बुक रहती है। गंभीर स्थितियों के मरीजों की केयर एवं सर्जरी की उपलब्धता के कारण एक वर्ष से भी कम समय में अस्पताल में पूरे पश्चिमी राजस्थान के रोगी पहुंचने लगे हैं। संघ प्रमुख श्री ने अस्पताल की सभी इकाईयों का निरीक्षण किया एवं वहाँ भर्ती बालकों के अभिभावकों से बातचीत कर अस्पताल के बारे में जानकारी ली।

खरी-खरी

बस केवल चुनाव, चुनाव और चुनाव!

भारत की वर्तमान व्यवस्था में सरकारों द्वारा हर निर्णय चुनावों के मद्देनजर किया जाता है। सरकार में बैठा कोई भी व्यक्ति भूतपूर्व होना नहीं चाहता और भूतपूर्व होने से बचने का एक मात्र उपाय वर्तमान बने रहने के लिए चुनाव जीतना है। इसलिए हर राजनीतिज्ञ के लिए चुनाव अर्जुन की आँख बने रहते हैं। होने को तो चुनाव एक साधन है सत्ता हासिल कर राष्ट्र सेवा करने का लेकिन वर्तमान व्यवस्था को देखकर तो यही लगता है कि चुनाव ही साध्य है इसलिए चुनाव को मद्देनजर रखकर ही काम किया जाता है। सरकारें चुनावों की आचार संहिता के थोड़ा पहले अति सक्रिय होती हैं और चुनावों के बाद अगले चुनाव तक शिथिल हो जाती हैं। चुनावी वर्ष में नौकरियों के विज्ञापन निकलते हैं, चुनावी वर्ष में कर्मचारियों की मांगे मानी जाती हैं, चुनावी वर्ष में शिलान्यास और उद्घाटन होते हैं तो चुनावी वर्ष में कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा एवं शुरुआत होती है। इतना ही नहीं बल्कि चुनावों के निकट आने पर सरकारें राष्ट्र एवं राज्य के हितों के विपरीत भी निर्णय कर लेती है। यहाँ उचित और अनुचित के बारे में कोई विचार नहीं किया जाता क्योंकि उनको तो चुनाव जीतना होता है। राष्ट्र और राज्य के प्रति उनका कोई अपनत्व नहीं होता बल्कि राज्य और राष्ट्र के संसाधन तो उनके लिए चुनाव जीतने के साधन मात्र होते हैं। प्रायः यह आरोप हमारे पूर्वजों पर लगाया जाता है कि वे राज्य के संसाधनों का अपने ऐश्वर्य के लिए उपयोग करते थे लेकिन वर्तमान शासकों को देखें तो स्पष्ट होता है कि वे राज्य या राष्ट्र के संसाधनों का अपनी व्यक्तिगत ईच्छाओं के लिए मालिक के रूप में उपयोग करते हैं बिना किसी अपनत्व और उत्तरदायित्व के। इसीलिए तो वे चुनावों से पहले लोगों को खुश करने के लिए अवैध रूप से सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण करने वालों के कब्जों को वैध बनाने के लिए सरकारी अभियान चलाते हैं। चुनावों में चंदा देने वालों के बड़े-बड़े बैंक लोन माफ किए जाते हैं। चंदा देने वाले खानमालिकों के लिए चारागाहों की भूमि खुर्द-बुर्द करने के नियम बनाए जाते हैं। यदि कोई अपने राज्य या राष्ट्र को अपना मानता हो तो क्या ऐसा करेगा लेकिन अपनत्व एवं उत्तरदायित्व तो बहुत पीछे छूट गया है अब तो केवल चुनाव, चुनाव और चुनाव याद रहते हैं। ऐसे में स्वर्गीय गायत्री देवी द्वारा एक चुनावी सभा में रूंधे गले से दिया गया वह वक्तव्य याद आता है कि मेरे जयपुर का क्या हाल कर रखा है। अब वह अपतत्व इतिहास बन गया है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	21.10.2017 से 24.10.2017	**चितावा**। (नागौर) कुचामन-सीकर मार्ग पर स्थित।
2.	मा.प्र.शि. (बालक)	23.10.2017 से 29.10.2017	वडासण-कड़ा माणसा रोड। **मेहसाणा**।
3.	मा.प्र.शि. (बालिका)	23.10.2017 से 29.10.2017	**काणेटी**, बालिका प्राथमिक शाला। अहमदाबाद से 20 किमी दूर साणंद से 2 किमी दूर काणेटी।
4.	बाल शिविर	28.10.2017 से 29.10.2017	तपोभूमि विद्यापीठ **बुडीवाड़ा**। बालोतरा-पादरू मार्ग पर। बालोतरा से 18 किमी दूर।
5.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	29.10.2017 से 31.10.2017	**नारोली**, तह. थराद, जिला-बनासकांठा (गुजरात)।
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	02.11.2017 से 05.11.2017	क्षत्रिय सभा भवन **धरियावद**। जिला प्रतापगढ़।
7.	बाल शिविर	04.11.2017 से 05.11.2017	सोलर इंटरनेशनल स्कूल। **सांचौर** (जालोर)।
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	1.12.2017 से 3.12.2017	**ढीमा**, जिला-बनासकांठा (गुजरात)।
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.12.2017 से 25.12.2017	**डोभाड़ा**, तह. वडाली, जिला-साबरकांठा (गुजरात)।

21 अक्टूबर से पोकरण में होने वाला बालिका प्रा.प्र.शि. अभी स्थगित रखा गया है।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज, काली जूती व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

शंभुसिंह राजावत व बृजराजसिंह राजावत सम्मानित

जोधपुर में आयोजित शेखाजी जयंती समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार शंभुसिंह राजावत अल्पज्ञ व चित्रकार व लेखक बृजराजसिंह राजावत को सम्मानित किया गया। शंभुसिंह की राजस्थानी एवं हिन्दी में अब तक 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी पुस्तकें केन्द्रीय हिन्दी अकादमी व राजस्थानी भाषा अकादमी से सम्मानित हो चुकी हैं। बृजराजसिंह राजावत प्रेरणादायी इतिहास पात्रों पर चित्रकथाएं लिख रहे हैं। अभी तक इन्होंने दुर्गादास राठौड़, मीरांबाई, पद्मनी व गोरा बादल, हाड़ी रानी, वीर सावरकर, अभिज्ञान शाकुंतलम् आदि को अपनी चित्रकथाओं में उकेरा है।

वाग्भट्ट आयुर्वेद का श्री गणेश

प्रसिद्ध राष्ट्रवादी चिंतक स्व. राजीव दीक्षित से जुड़े ट्रस्ट द्वारा आयुर्वेद उत्पादों की श्रृंखला वाग्भट्ट आयुर्वेद का 1 अक्टूबर को जोधपुर में शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने भारतीय उत्पादों के साथ साथ भारतीय विचार दर्शन को भी अपनाने की बात कही।

अर्जुन अवार्डी मगनसिंह राजवी सम्मानित

भारत में पहली बार आयोजित हो रही अंडर-17 फीफा विश्वकप फुटबॉल प्रतियोगिता के उद्घाटन के दौरान 6 अक्टूबर को प्रधानमंत्री ने भारतीय फुटबाल टीम के पूर्व कप्तानों एवं अर्जुन पुरस्कार विजेता फुटबॉल खिलाड़ियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी एवं भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान रहे मगनसिंह राजवी को भी स्मृति चिन्ह, शॉल एवं 5 लाख रूपये भेंट कर प्रधानमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। मगनसिंह राजवी भारत सरकार द्वारा अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किए जा चुके हैं।

ठा. किशनसिंह की छत्री का जीर्णोद्धार

जसोल के राणी रूपादे के पालिया पर रावल भारमल जी के पुत्र ठा. केशरसिंह की छत्री का जीर्णोद्धार कर मूर्ती स्थापना के अवसर पर राणी भटियाणी संस्थान के अध्यक्ष रावल किशनसिंह एवं सिवाणा विधायक हमीरसिंह के आतिथ्य में समारोह रखा गया जिसमें ठा. किशनसिंह के वंशजों के गांव असाड़ा व जागसा के समाज बंधुओं के अतिरिक्त बूडीवाड़ा, टापरा, दाखां, धनवा, सिमालिया, सिणली, वरिया, मेवानगर, तिलवाड़ा, गोल सिमरलाई आदि गांवों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। साधु संतों के पावन सानिध्य में वक्ताओं ने महापुरूषों के ऋण से उऋण होने के लिए उनके कदमों का अनुसरण करने की आवश्यकता जताई।

सुरेन्द्रसिंह के परिजनों को चैक भेंट

आनंदपाल आंदोलन के दौरान मारे गए समाजबंधु सुरेन्द्रसिंह राठौड़ के परिजनों को राज्य सरकार द्वारा समझौते के तहत तय शर्तों के अनुसार 5 लाख की सहायता राशि का चैक भेंट किया गया।

भचाऊ कें संस्थापक की मूर्ति का अनावरण

गुजरात के कच्छ क्षेत्र के भचाऊ तालुका राजपूत समाज ने विजयादशमी के अवसर पर भचाऊ के संस्थापक ठाकुर रामसिंह जाडेजा की आदमकद मूर्ति के अनावरण का कार्यक्रम रखा। इस अवसर पर मूर्ति अनावरण में महत्ती भूमिका निभाने वाले नगरपालिका उप प्रमुख कुलदीपसिंह जाडेजा का सम्मान किया गया। हरिसिंह जाडेजा, रविभाई वोरा, अशोकसिंह झाला, सांमतभा गढवी, नवलदान गड़वी, नटूभा सोढा आदि प्रमुख लोगों ने प्रासंगिक उद्बोधन दिए।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

जयमलजी की जयंती मनाई

उदयपुर में 1 अक्टूबर को भक्ति एवं शक्ति के अद्भूत सांमजस्य जयमलजी की जयंती संघ के स्वयंसेवकों ने स्थानीय सहयोगियों की सहायता से मनाई। प्रो. कमलसिंह बेमला ने जयमलजी के जीवन चरित्र को विस्तार से बताया वहीं दलपतसिंह गुडा केशरसिंह ने संघ के शिविरों में जाकर आत्मविश्वास का अभ्यास कर परिस्थितियों से जूझने की कला सीखने का आग्रह किया। गोविन्दसिंह सोडावास ने संगठित होकर अच्छे काम करने की सलाह दी। संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला, सुरेन्द्रसिंह रोलसाहबसर, भागीरथसिंह बाबरा आदि अनेक लोग इस अवसर पर उपस्थित रहे।

मेड़ता सिटी में मीरा स्मारक पर जयमलजी की 510 वीं जयंती 1 अक्टूबर को निम्बार्क तीर्थ सलेमाबाद के पीठाधीश्वर श्यामशरण देवाचार्य के आतिथ्य में मनाई गई। महेन्द्रसिंह कडेल, जगजीतसिंह, उम्मेदसिंह अराबा, श्याम बिड़ला, राधा मोहन सोनी आदि भी अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। राजपूत छात्रावास से चारभुजा मंदिर तक भव्य शोभायात्रा निकाली गई। मुख्य अतिथि पीठाधीश्वर ने जयमलजी को अद्भूत वीर बताते हुए उनका स्मरण किया। उन्होंने राजस्थान की भूमि को भारत का गौरव बताया एवं मेड़ता की भूमि को धन्य बताया जहां जयमलजी व मीराबाई जैसी महान आत्माओं ने अवतार ग्रहण किया। इस अवसर पर समाज की प्रतिभाओं को प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

ऊबरी में स्नेहमिलन

गुजरात के बनासकांठा प्रांत की कांकरेज तहसील के ऊबरी गांव में 8 अक्टूबर को स्नेहमिलन रखा गया जिसमें अजीतसिंह कुणघेर, गुमानसिंह माडका, डूंगरसिंह चारड़ा आदि संघ का संदेश लेकर पहुंचे। दीपावली के बाद तहसील के गांवों में यात्रा के आयोजन को लेकर चर्चा हुई एवं नारोली में आयोज्य बालिका शिविर में बालिकाओं को भेजने को लेकर भी चर्चा हुई। दीपावल के बाद आयोज्य प्रांत के शिक्षक स्नेहमिलन में भी तहसील के शिक्षकों के शामिल होने हेतु संदेश देने के लिए योजना बनाई गई।

राव शेखा की जयंती मनाई

विजयादशमी के पर्व के अवसर पर शेखावटी जनपद के संस्थापक एवं नारी के सम्मान की रक्षा के लिए अपने ही रिश्तेदारों से संघर्ष कर उन्हें नेस्तानाबूत करने वाले राव शेखाजी की जयंती प्रदेश भर में मनाई गई। अमरसर में विधानसभा उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह के आतिथ्य में सर्व समाज का कार्यक्रम किया गया। जयपुर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम हुए। जोधपुर में मोहननगर बीजेएस स्थित जोगमाया मंदिर में कार्यक्रम रखा गया जिसमें केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद गोपालसिंह ईड़वा, न्यायाधीश पुष्पेन्द्रसिंह भाटी, सेवानिवृत मेजर जनरल राणूसिंह राठौड़, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, भवानीसिंह लूणियावास आदि ने शेखाजी का जीवन वृतांत प्रस्तुत किया। उदयपुर में महाराव शेख समूह द्वारा होटल अबावगढ़ सफायर में कार्यक्रम रखा गया जिसमें संघ के स्वयंसेवक भी शामिल हुए। उदयपुर नगर विकास के पूर्व उपसभापति महेन्द्रसिंह शेखावत ने शेखाजी के जीवन चरित्र के बारे में विस्तार से बताया एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण कार्य को अनुकरणीय बताया। संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने उदयपुर में होने वाली संघिक गतिविधियों की जानकारी दी।

शाखा के मैदान से

जालोर संभाग के सांचौर-रानीवाड़ा प्रांत के सुरावा गांव की बालक एवं बालिका शाखा।

जोधपुर संभाग के स्वयंसेवकों का मिलन

संघ प्रमुख श्री के जोधपुर प्रवास के दौरान 30 सितंबर को जोधपुर संभाग के संघ कार्यालय तनायन में संभाग के स्वयं सेवकों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें शेरगढ़, ओसियां, भोपालगढ़ व जोधपुर शहर चारों प्रांतों के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संघ प्रमुख श्री ने प्रत्येक से उसके द्वारा किए जा रहे संघ कार्य की जानकारी ली एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। संभाग के चारों प्रांतों में उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद हुए कार्यक्रमों पर चर्चा की गई एवं आगामी कार्यक्रमों की चर्चा करने के लिए प्रांत अनुसार बैठकर योजना बनाई।

संघ प्रमुख श्री का बालोतरा प्रवास

अपने पश्चिमी राजस्थान प्रवास के तहत संघ प्रमुख श्री 3 अक्टूबर को बालोतरा पहुंचे। वहाँ दुर्गादास राजपूत छात्रावास में बालोतरा व बायतु क्षेत्र के स्वयंसेवकों से मिलकर संघ कार्य की जानकारी ली। छात्रावास में अध्ययनरत विद्यार्थियों से मिलकर अध्ययन, छात्रावास में मिलने वाली सुविधाओं आदि की जानकारी ली। उन्होंने अच्छी शिक्षा के साथ साथ संस्कार निर्माण की भी आवश्यकता जताई ताकि श्रेष्ठ समाज एवं श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण संभव हो सके। इस अवसर पर स्वयंसेवकों के साथ साथ संत रघुवीरदास महाराज एवं कथावाचक विष्णुदत्त महाराज भी उपस्थित रहे।

(पृष्ठ एक का शेष)

विद्या सभा, अहमदाबाद

सिडनी आस्ट्रेलिया

बड़ोदरा, गुजरात

लुनावाडा जी महिसागर, गुजरात

पथ प्रेरणा यात्रा, बाड़मेर

संगठन है...

नीमकाथाना में तंवरावाटी राजपूत समाज द्वारा विजयादशमी पर्व मनाया गया। तंवरावाटी राजपूत समाज द्वारा ही नारेहड़ा में तहसील स्तरीय कार्यक्रम रखा गया जिसमें राज्य सैनिक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रेमसिंह बाजौर भी शामिल हुए। गुजरात का राजपूत समाज विजयादशमी को बड़े हर्षोल्लास से मनाता है एवं पूरे प्रदेश भर में शस्त्र पूजन के कार्यक्रम रखे जाते हैं। गुजरात से संघ स्वयंसेवक दिग्विजयसिंह पलवाड़ा द्वारा समाचारों को संकलित करके भेजा गया है। उनके अनुसार अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत का कार्यक्रम साणंद के काणेटी गांव की शाखा में मनाया गया जिसमें गुजरात में संघ की महिला विभाग की प्रमुख जागृति बा हरदासका बास एवं श्री राजपूत विकास संघ सांणद के प्रमुख दशरथसिंह पलवाड़ा ने अपनी बात रखी। 12 वर्षीय स्वयंसेवक पुष्पराजसिंह काणेटी ने दशहरा पर्व का महत्व बताया एवं बटुकसिंह काणेटी ने संचालन किया। सांणद तहसील के अन्य गांवों में भी ग्राम स्तर पर कार्यक्रम हुआ। बावला धोलका राजपूत युवा संघ द्वारा कौका गांव में तहसील स्तरीय कार्यक्रम किया। श्री चुड़ासभा राजपूत समाज धंधुका द्वारा धुंधुका स्थित छात्रावास में समारोह रखा गया। अहमदाबाद शहर में युवा राजपूत क्षत्रिय समाज राणीप द्वारा शोभायात्रा निकाली गई। श्री राजपूत विद्या सभा द्वारा राजपूत समाज भवन में विद्यार्थी सम्मान समारोह रखा गया जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह बाघेला, संत आनंद मूर्ति, GTPL के डायरेक्टर कनकसिंह राणा सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए। गांधीनगर के सेक्टर 7 स्थित टाउनहॉल में कच्छ काठियावाड़ राजपूत सेवा समाज द्वारा 30वां दशहरा समारोह आयोजित किया जिसमें निर्माणाधीन स्पर्धात्मक भवन के सहयोगियों को सम्मानित किया गया। गांधीनगर जिले के कड़ी तालुका में राजपूत समाज द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला एवं वर्तमान उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल के आतिथ्य में विशाल शोभायात्रा एवं सामूहिक शस्त्र पूजन किया गया। कलोल तालुका में समाज द्वारा खुली जीप में सवा आठ फीट की तलवार के साथ शोभायात्रा निकाली गई। सुरेन्द्रनगर में झालावाड़ राजपूत समाज के साथ मिलकर समाज की सभी संस्थाओं ने भव्य दशहरा समारोह आयोजित किया। जिले के मोईपाणा गांव में इस अवसर पर श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्नेह मिलन रखा गया। हलवद धागंध्रा राजपूत समाज द्वारा पूर्व मंत्री आई के जाड़ेजा की उपस्थिति में दशहरा मनाया। अखिल गुजरात क्षत्रिय संघ खेड़ा द्वारा राज्य सभा सांसद लालसिंह, संस्था के प्रमुख जनकसिंह झाला, हेपुसिंह चौहान, रामसिंह परमार पूर्व मंत्री आदि की उपस्थिति में नडियार में कार्यक्रम रखा गया। मोरबी राजपूत समाज द्वारा मोरी के दरबारगढ़ में व नवसारी में कच्छ कठियावाड़ क्षत्रिय राजपूत समाज द्वारा दशहरा मनाया गया। कच्छ जिले के भुज, मुन्दरा, मांडवी, भचाऊ, रापड़, गांधीधाम, नखत्राण आदि में दशहरा महोत्सव मनाया गया। मांडवी की शोभायात्रा में घर घर घूमकर भोजन लिया वही भचाऊ में जागीरदार रामसिंह जी मेघराजसिंह जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। जूनागढ़ जिले के केशाद, देवभूमि द्वारिका में कार्यक्रम हुआ। जामनगर जिले की विभिनन संस्थाओं द्वारा जिला स्तर पर कार्यक्रम किया गया। जिले के ध्रोल, गलवादर आदि स्थानों पर भी अलग अलग कार्यक्रम हुए। पंचमहल जिला राजपूत समाज एवं पंचमहल जिला राजपूत युवा एसोसिएशन द्वारा गोधरा में कार्यक्रम किया गया। महिसागर राजपूत समाज युवा संघ द्वारा दशहरा समारोह व शोभायात्रा महिसागर में रखी गई। सूरत, राजकोट व वड़ोदरा जिले में भी विभिन्न स्थानों पर दशहरा मनाया गया जिसमें शोभायात्रा समारोह के साथ साथ तलवार बाजी का प्रदर्शन किया गया। गुजरात से विदेशों में गए राजपूत युवाओं ने वहां दशहरा मनाकर अपने जड़ो से जुड़े रहने का प्रयास किया। राजपूत क्षत्रिय एसोसिएशन ऑफ मेलबोर्न का मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में व राजपूत एसोसिएशन ऑफ सिडनी ने सिडनी में दशहरा मनाया जिसमें वहां रह रहे सभी स्वजातीय बंधु शामिल हुए।

बाड़मेर में दशहरे के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति पथप्रेरणा यात्रा निकाली गई। शहरवासियों ने स्थान स्थान पर यात्रा का स्वागत किया। गढ़ मंदिर पर सैकड़ों शस्त्रों की पूजा से प्रारंभ हुई यात्रा राणी रूपादे संस्थान में सभा में तब्दील हो गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली ने इस अवसर पर अपनी बुनियाद को याद रखते हुए भविष्य बनाने की बात कही। पूर्व विधायक प्रतापसिंह खाचरियावास ने यात्रा के दौरान एकता और अनुशासन को अनुकरणीय बताया। सुखदेवसिंह गोगामेडी ने महान परंपराओं एवं इतिहास से जुड़ने का आह्वान किया। अंत में त्रिभुवनसिंह ने आभार व्यक्त किया।

सभी मनुष्य ईश्वर की संतान

जैसलमेर जिले के राजमथाई में चल रहे माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में अपने प्रवास के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री ने वहां आयोजित सर्व समाज स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए कहा कि सनातन धर्म में मानव-मानव में किसी भी प्रकार का भेद नहीं बताया गया है। सामाजिक व्यवस्थाकारों ने अपनी सुविधानुसार सामाजिक व्यवस्था को ही धर्म बताया जिसके परिणाम स्वरूप समाज में मानव-मानव के बीच भेद पैदा हुआ जबकि धर्म में इस प्रकार के किसी भेद की मान्यता नहीं है। सनातन धर्म के प्रमाणिक शास्त्र गीता में प्रत्येक मनुष्य के कल्याण का मार्ग बताया गया है। यर्थाथ गीता इसका सर्वाधिक प्रमाणिक व्याख्या है। इसलिए हम सब को इसे कम से कम चार बार पढ़ कर धर्म की सही परिभाषा समझनी चाहिए एवं इसमें बताए क्रियात्मक पथ पर चलकर ईश्वर तक मार्ग तय करना चाहिए। इस अवसर पर संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित लोगों को यर्थाथ गीता की प्रतियां भेंट की एवं इसके अध्ययन का आग्रह किया। इससे पूर्व बाड़मेर जिले के नौसर गांव में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के स्वागत कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को भी यर्थाथ गीता प्रतियां की भेंट की गई।

राजस्थान राजपूत परिषद अहमदाबाद का दशहरा मिलन

अहमदाबाद के सरदार पटेल शाहीबाग में राजस्थान राजपूत परिषद का पांचवा स्नेह मिलन 8 अक्टुबर को संपन्न हुआ। समारोह में अतिथि के रूप में शिरकत कर रहे संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं पूर्व सांसद पदमश्री नारायणसिंह माणकलाव ने कहा कि भागदौड़ की जिंदगी में हम सब हमारा सामाजिक दायित्व बोध भूलते जा रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी दायित्व बोध का भान कराने के लिए हमारे द्वार पर दस्तक दे रहा है। संघ युवाओं में क्षात्र धर्म, संस्कृति, मर्यादा, अनुशासन, ईमानदारी एवं भाईचारे की भावना जागृत कर रहा है। आचार्य धर्मबंधु जी ने आर्य सनातन संस्कृति की विस्तृत जानकारी दी एवं सनातन धर्म का यथार्थ अर्थ समझाया। तारातरा महंत प्रतापपुरी ने सात्विक खान पान पर जोर दिया। पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह सिरोही ने इतिहास के उदाहरण देकर एकता का महत्व समझाया। चक्रवर्ती सिंह जोजावर ने शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। दैनिक भास्कर दिल्ली ब्यूरो के वरिष्ठ पत्रकार श्रवणसिंह दासपां, संत प्रीतम मुनि, आजादसिंह राठौड़ (बाड़मेर), सोहनसिंह बालावत बैंगलोर आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ईश्वरसिंह ढीमा व दुर्जनसिंह बिंजराड़ ने किया। संस्थान के भवन निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी दी गई। उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद के सिविल अस्पताल के निकट संस्थान का भवन निर्माण कार्य चल रहा है।

राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई का 36वां दशहरा स्नेहमिलन

प्रतिवर्ष की भांति राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई ने अपना 36वां दशहरा मिलन कार्यक्रम 8 अक्टूबर को सुधांशु महाराज के आश्रम ठाणे में मनाया। सम्मेलन में गाजियाबाद के महंत नारायणगिरीजी, राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी विक्रमसहिं इंद्रोई, सामाजिक कार्यकर्त्ता यशवर्धनसिंह शेखावत, शेरसिंह राणा, महिपालसिंह मकराणा, लोकेन्द्रसिंह कालवी सहित अनेक लोग अतिथि के रूप में शामिल हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ एवं विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। परिषद के संरक्षक रघुनाथसिंह सराणा ने सामाजिक संगठनों की आपसी खींचतान एवं एक दूसरें पर किए जा रहे विषवमन पर पीड़ा जाहिर की। साथ ही समाज को सीढ़ी बनाकर स्वार्थी व अति महत्वाकांक्षी लोगों द्वारा किए जा रहे कृत्यों से सावधान रहने की बात कही गई। विक्रमसिंह इंद्रोई ने संघ की गतिविधियों का परिचय दिया वहीं यशवर्धनसिंह ने आरक्षण के विषय में भ्रांत धारणाओं से बचते हुए सही दिशा में संघर्ष की आवश्यकता जताई। शेरसिंह राणा ने राम व कृष्ण के वंशजों की तरह मर्यादित आचरण की आवश्यकता जताई। अन्य वक्ताओं ने समाज, संगठन, आरक्षण, संस्कार निर्माण आदि विषयों पर अपनी बात कही। अध्यक्ष रतनसिंह तूरा ने विकास परिषद के विलय पर प्रसन्नता व्यक्त की।

संघ प्रमुख श्री का सिवाणा प्रवास

अपने पश्चिमी राजस्थान प्रवास के दौरान 2 अक्टूबर को संघ प्रमुख श्री सिवाणा पहुंचे। वहां चल रहे बालिका शिविर में बालिकाओं से अनौपचारिक वार्ता की एवं उनके अनुभव जाने। बालिकाओं को संघ प्रमुख श्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति को नारी ही बचा सकती है, महिलाओं के सहयोग के बिना संघ काम नहीं कर सकता। स्त्री विवाह के बाद पराये घर को अपना बना लेती है, अपने गांव की भाषा तक भूल जाती है यह उसकी समायोजन की क्षमता है जिसके प्रसार की आवश्यकता है। आपको इस बात के लिए जागरूक होने की आवश्कता है कि अंतर में कितना बदलाव हुआ है। बालिकाओं से मिलने से पहले संघ प्रमुख श्री पूज्य तनसिंह जी की धर्मपत्नी से मिलने उनके आवास पर गए एवं उनसे कुशल क्षेम पूछ कर आशीर्वाद लिया। 3 अक्टूबर को बालिकाओं के शिविर के विदाई कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सात दिन आप लोगों ने यहां प्रशिक्षण लिया लेकिन फिर भी आपके भाव कहते हैं कि मन थकता नहीं हमारा, तो यही शिविर का परिणाम है। विदाई के उपरांत समाज बंधुओं के स्नेहमिलन में शामिल हुए। स्थानीय स्वयंसेवकों से मिलकर क्षेत्र में सांघिक गतिविधियों की जानकारी ली। शिविर के विदाई कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी की धर्मपत्नी भी बालिकाओं को आशीर्वाद देने पहुंची।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org